विचार बिन्दु

खुद के लिये जीने वाले की ओर कोई ध्यान नहीं देता पर जब आप दूसरों के लिये जीना सीख लेते हैं तो वे आपके लिये जीते हैं।

–श्री परमहंस योगानंद

जनतंत्र नहीं, जन प्रतिनिधि अपराधी हैं

बात 10-15 वर्षों की नहीं 75 वर्षों की है। बात यह भी नहीं है कि किस सरकार ने क्या किया। बात है सभी केन्द्र व राज्य सरकारों की। 75 वर्ष का कालखंड किसी भी देश के इतिहास में बहुत छोटा नहीं होता। स्वतंत्रता की शताब्दी में मात्र 25 वर्ष शेष है। देश अमृत महोत्सव मना रहा है। निश्चय ही यह कहना अनुचित होगा कि स्वतंत्रता के बाद कुछ नहीं हुआ। परंतु हमें यह स्मरण रखना होगा कि कुछ भौतिक विकास देश के विकास का प्रतीक नहीं होता। इस भौतिक विकास की तुलना में समाज में क्या सुधार हुआ है, यह महत्वपूर्ण है। समाज में नैतिक-पक्ष सबल हुआ है या दुर्बल, और क्या समाज में स्वस्थ परम्पराऐं स्थापित हुई हैं या विकृतियाँ बढ़ी हैं? यक्ष प्रश्न यह भी है कि यदि विकृतियाँ बढ़ी हैं तो इन सभी के लिये कौन ज़िम्मेदार है?

स्वतंत्रता से पूर्व अंग्रेज़ और मुग़ल शासन को दोष दे सकते थे, परंतु स्वतंत्रता के बाद किसे दोष देंगे। स्वतंत्रता के बाद तो हमारा देश एक प्रभुता संपन्न जनतांत्रिक गणतंत्र बन गया। अर्थ यह कि हमारा शासन हमारे हाथों में आया और सुविधा की दृष्टि से निर्वाचित जन-प्रतिनिधि शासन का संचालन करने लगे। अत: सुशासन और कुशासन दोनों के लिये वे ही ज़िम्मेदार माने जायेंगे।

हमारा देश आबादी की दृष्टि से विश्व में सबसे बड़ा जनतंत्र है। अमेरिका का संपूर्ण इतिहास ही ढाई सौ तीन सौ वर्ष का है। वहाँ भी संयुक्त राज्य अमेरिका का वर्तमान स्वरूप बहुत संघर्षों के बाद आया है। चीन की स्वतंत्रता हमारी समकालीन है। दोनों ही देश आज 'सफलतम देशों' में से हैं। समस्याएँ उनकी भी हैं पर हमारी समस्याएँ अत्यंत गंभीर हैं।

यह तो निर्विवाद हो जाता है कि हमारी समस्याओं के लिये हमारा जनतंत्र अपराधी नहीं है, उसे चलाने वाले जन-प्रतिनिधि अपराधी हैं। आज सर्वत्र महँगाई की चर्चा है। बार-बार घोषणा की जाती है कि हम विश्व में पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और सन् 2030 तक तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेंगे। प्रश्न यह है कि 75 वर्ष में ऐसा क्यों नहीं हुआ? हमने अपने विशाल खनिज भंडारों का दोहन उचित रीति-नीति से क्यों नहीं किया? बेतरतीब दोहन व भ्रष्टाचार का समावेश क्यों हुआ? यह देश प्रकृति का वरदान है। यहाँ सभी जलवायु हैं, सभी कुछ खाद्य पदार्थों का उत्पादन होता है। पहाड़, रेगिस्तान, पठार व मैदान सभी हैं। अरावली जैसी प्राचीन पर्वत श्रृंखला है और अपेक्षाकृत हिमालय की नवीन पर्वत श्रृंखलाएँ, यहाँ रेत से लेकर स्वर्ण सभी खनिज उपलब्ध हैं। हमने किसान और मज़दूर को 75 वर्ष में सशक्त व सबल क्यों नही बनाया? कृषि व खनिज के समस्त लाभ संपन्न लोगों ने तो लिये ही, सबसे ज़्यादा लाभ भूमि व खदानों के माफिया बनकर जन-प्रतिनिधियों ने या तो स्वयं लिया या रिश्वत लेकर अपने चहेतों व भाई भतीजों को प्रश्रय दिया। कृषि व खदानों के अधिकांश लाभ इन्हीं बिचौलियों, दलालों ने हड़प लिये। बीज, खाद, पानी, भंडारण, बिक्री में अव्यवस्था बनी रही। प्रत्येक स्तर पर लाभ भ्रष्टाचार, कालाबाज़ारी से दलालों व बिचौलियों ने किसान-मज़दूर तक पहुँचने ही नहीं दिया।

प्रत्यक्षतः अधिकांश जनप्रतिनिधि बनते ही इसलिये हैं कि वे जनता का शोषण करना चाहते हैं, संपन्न होना चाहते हैं और ऐसा हो भी रहा है। उन्हें सचेत हो जाना चाहिये कि वे सुधर जायें अन्यथा वह दिन दूर नहीं कि जिस दिन जनतंत्र को दोषी बताने वाले जनप्रतिनिधि अपने अपराधों की सज़ा भुगत रहे होंगे।

बेरोज़गारी एक दूसरी समस्या है जिसकी चर्चा होती है। ज़रा बताइये कि चीन ने घर-घर विशिष्ट व चिन्हित उत्पादों को प्रश्रय देकर सारे विश्व के बाज़ारों को कैसे भर दिया? किस प्रकार वहाँ प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रोजगार में लग गया। अमेरिका व चीन की ही भाँति कई अन्य देश भी हैं जिन्होंने जनतंत्रात्मक देश की भाँति प्रगति की है, फर्क यही है कि उनमें देशहित की भावना है और हमारे भीतर सामान्यत: स्वार्थ सर्वोपरि है। हमारे जन प्रतिनिधि अपने अथवा दलीय स्वार्थ के लिये किसी भी सीमा तक गिर सकते हैं। इस देश की अन्य समस्याओं में नक्सलवाद और आतंकवाद हैं। क्या विदेशी आतंकवाद के अलावा नक्सलवाद को हमारे देश के नेता किसी न किसी रूप में पोषण करने के लिये ज़िम्मेदार नहीं हैं? नक्सलवाद इसी देश के नेताओं ने पैदा किया और उसी तरह बाह्य आतंकवाद को भी हमारे ही कई नेता व जनप्रतिनिधि प्रश्रय देते हैं।

हमारे जन प्रतिनिधि ही विधानसभाओं और संसद में बैठकर नियम कानून बनाते हैं, संविधान बनाते हैं, संशोधन करते हैं। इन्हीं नियमों व कानून के अन्तर्गत, संविधान के दायरे में न्यायपालिका व कार्यपालिका काम करती हैं और मीडिया भी उसका पालन करता है। फिर बताइये इन चारों स्तंभों के किसी भी भ्रष्टाचार के लिये कौन दोषी हैं? केन्द्र के अधिकारों के साथ राज्य के स्वतंत्र अधिकार भी हैं। उनके अपने साधन भी हैं। सिवाय सीमा विवाद, जल विवाद, भाषा विवाद, आरक्षण और अन्य महत्व हीन, निरर्थक एवं विभाजनकारी मुद्दों को उठाकर मुख्य मुद्दों से भटकाना जनप्रतिनिधियों का काम रहा है। जाति, वर्ग और संप्रदाय संबंधी भावनात्मक मुद्दों को भड़काते रहते हैं और हिंसा, लड़ाई-झगड़े, तोड़-फोड़ को बढ़ावा ही नहीं देते, पैदा भी करते हैं।

सबसे अधिक भर्त्सना योग्य बिंदु यह है कि ये जनप्रतिनिधि येन केन प्रकारेण, धनबल और बाहुबल के आधार पर जनप्रतिनिधि बने रहना चाहते हैं, सत्ता से चिपके रहना चाहते हैं और उनकी अधिकांश शक्ति इसी में लगी रहती है। इस देश को सबसे अधिक हानि शिक्षा में सुधार न होने के कारण हुई है। शिक्षा राज्य का विषय है, हाँ केन्द्र एक रीति-नीति अवश्य बनाता है। किसी भी राज्य का यह दावा नहीं हो पाया कि वह गुणात्मक शिक्षा दे पाया है या विश्वस्तरीय शिक्षा संस्थान दे पाया है। आज भी हमारे देश में शिक्षा विश्व में सबसे निचले पायदान पर है। जनप्रतिनिधियों की रुचि कभी भी शिक्षा में मूलभूत सुधार करने की नहीं रही। उनकी प्राथमिकता में वह आता ही नहीं है। वे शिक्षा को मात्र खर्च का निमित्त मानते हैं। वे यह नहीं समझते कि शिक्षा ही समाज को सबल बनाने का, उपयोगी व सभ्य नागरिक बनाने का, देश प्रेम के विकास का, नैतिक व चारित्रिक गुणों के जन्म व पोषण का, और अंततोगत्वा स्वस्थ, सबल, सुखी और संपन्न राष्ट्र बनाने का एक मात्र साधन है।

कहा जा सकता है कि जनप्रतिनिधियों को हम ही तो चुनते हैं। जैसा समाज होगा, वैसे ही तो प्रतिनिधि होंगे। परंतु यह भी तो सच है कि रावण और कंस के अत्याचारों के कारण ही तो राम और कृष्ण का जन्म हुआ। गुलामी का दंश झेलते हुए भी वीर शिवाजी और प्रणवीर प्रताप का स्वतंत्रता संग्राम उत्पन्न हुआ। क्या हम भूल जाते हैं कि इसी भूमि से नेताजी सुभाष और शहीद भगतसिंह जैसे क्राँतिकारियों का जन्म हुआ और उन्होंने विदेशी हुकूमत की नींव हिला दी। जनप्रतिनिधियों को स्मरण रखना चाहिये कि वे अपने स्वार्थ व भ्रष्टाचार के कारण ऐसे क्रांतिकारियों को जन्म देंगे जो भ्रष्ट स्वार्थी व गद्दार जनप्रतिनिधियों को सबक सिखायेंगे, उन्हें अपमानित करेंगे और यूँ कहना चाहिये कि दुष्टों का संहार करेंगे। लेकिन तब तक देश का काफी नुकसान हो चुका होगा और सुधार में विलम्ब भी। अभी भी समय है कि जनप्रतिनिधि सचेत हों और अहिंसक या हिंसक क्रांति का आवाहन न करें।

कई प्रकाशित साँख्यिकी के अनुसार प्रत्येक दल में धनबली और बाहुबलीयों की भरमार है। उनमें से कई के विरुद्ध गंभीर मामले न्यायालय में दर्ज हैं। वे अपराधी प्रमाणित होकर जेल में भले ही न रहे हों, जनता उनकी असलियत जानती है। वे अपने धनबल, व बाहुबल के आधार पर तथा इस देश के जातिगत अभिशाप के कारण भले ही चुनकर आ जाते हों, उन्हें स्मरण रखना चाहिये कि एक न एक दिन उनके पापों का घड़ा भरेगा ही और उनको अपने किये की सज़ा मिलेगी ही। प्रत्यक्षत: अधिकांश जनप्रतिनिधि बनते ही इसलिये हैं कि वे जनता का शोषण करना चाहते हैं, संपन्न होना चाहते हैं और ऐसा हो भी रहा है। उन्हें सचेत हो जाना चाहिये कि वे सुधर जायें अन्यथा वह दिन दूर नहीं कि जिस दिन जनतंत्र को दोषी बताने वाले जनप्रतिनिधि अपने अपराधों की सज़ा भुगत रहे होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

वैश्विक मंदी में भारत की विकास दर सबसे तेज

भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। भारत ने पिछले 10 सालों में शानदार आर्थिक विकास दर हासिल की है और जहां एक दशक पहले भारत दुनिया की 11वीं सबसे बड़ी इकोनॉमी था वहीं अब ये 6 स्थान आगे बढ़कर 5वें स्थान पर आ गया है।

भारत की इस उपलब्धि के साथ ब्रिटेन छठें स्थान पर फिसल गया है। वर्ष 2022 में पृथ्वी की आबादी 8 अरब के पार पहुंच गई। वैश्विक अर्थव्यवस्था ने 100 ट्रिलियन डॉलर का आंकड़ा पर कर लिया।

घ्श् के डेटा के अनुसार, दुनिया की अर्थव्यवस्था 101.6 ट्रिलियन डॉलर हो गई है। सबसे अहम बात ये है कि दुनिया की इस विशाल अर्थव्यवस्था में भारत का अहम योगदान है। भारत दुनिया की टॉप पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गया है।

प्रधानमंत्री आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष बिबेक देबरॉय ने कहा है कि साल 2047 तक भारत की अर्थव्यवस्था 20 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगी। इसी दौरान तक प्रति व्यक्ति आय भी 1000 अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाएगी। कोरोना महामारी के बाद अब आर्थिक सूचकांक में तेजी आई है। अब हर किसी की निगाह 2023-24 दौरान विकास दर पर रहने वाली है और साथ ही 2047 तक भारत की अर्थव्यवस्था कैसी होगी इस पर भी नजरें हैं।

माइक्रोसॉफ्ट के चेयरमैन और सीईओ सत्या नडेला ने कहा कि भारत को इस दशक के अंत तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने वाली तीन

डॉ. मोनिका ओझा खत्री

सकारात्मक बातें तकनीकी क्षेत्र में नजर आ रही हैं। इनमें तेजी से बढ़ते कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) प्रोजेक्ट, भारतीय कार्य बल द्वारा अपनी क्षमताएं लगातार सुधारना और गिटहब पर डेवलपर्स की गतिविधियां शामिल हैं।

ब्रिटेन की प्रतिष्ठित कंसल्टेंसी, सेंटर फॉर इकोनॉमिक्स एंड बिजनेस रिसर्च (सीईबीआर) ने अपनी रिपोर्ट का नवीनतम संस्करण सोमवार को जारी किया गया है। सीईबीआर ने अपनी नवीनतम वर्ल्ड इकोनॉमिक लीग टेबल-2023 में अनुमान जताया है कि भारत 2035 में 10 लाख करोड़ डॉलर की तीसरी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। थिंकटैंक ने भविष्यवाणी की है कि 2037 तक भारत तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति बनेगा। रिपोर्ट में भारत की ग्रोथ को अनस्टॉपेबल बताया गया है।

सीईबीआर ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास पर प्रकाश डालते हुए, रिपोर्ट में कहा गया है: 2035 में, हम अनुमान लगाते हैं कि भारत तीसरी 10-ट्रिलियन अर्थव्यवस्था बन जाएगा। महामारी के थमने के साथ आर्थिक गतिविधियों में तेज उछाल आया। इसके फलस्वरूप वित्त वर्ष 2021-22 में भारत की जीडीपी में 8.7प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिससे यह दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बन गया। वैश्विक मांग में गिरावट और महंगाई के दबाव को रोकने के लिए मौद्रिक नीति को कड़ा करने के बावजूद हम अब भी उम्मीद करते हैं कि वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत की विकास दर 6.8 प्रतिशत देखने को मिलेगी। वित्त वर्ष 2022-23 में भारत की आर्थिक विकास दर 13.5 फीसदी की दर से बढ़ी है।

(लेखक पूर्णिमा यूनिवर्सिटी, जयपुर के बीबीए की विभागाध्यक्ष है।)
–डॉ. मोनिका ओझा खत्री

500 स्काउट-गाइड्स ने परंपरागत वेशभूषा में पाली शहर का भ्रमण किया

- रैली ने भारत दर्शन कराया, पाली ने बिछाए पलक पावड़े

पाली, (निसं)। राष्ट्रीय स्काउट गाइड जम्बूरी के तीसरे दिन शुक्रवार को विभिन्न प्रांतों से आए 500 स्काउट गाइड के दल ने परंपरागत वेशभूषा में पाली शहर का भ्रमण किया। इससे पालीवासियों को मानो भारत दर्शन सी अनुभूति हुई। अतिथि सत्कार के लिए विख्यात पाली ने इन नन्हें पावणों का पलक पावड़े बिछा कर स्वागत किया।

रोहट स्थित जम्बूरी स्थल से विभिन्न प्रान्तों के 500 स्काउट गाइड का दल दोपहर करीब 1:00 बजे सेवा समिति आश्रम पहुंचा। वहां से भोजन के पश्चात दल बांगड़ विद्यालय खेल मैदान आया। यहां स्काउट-गाइड की रैली को अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रशासन श्री चंद्रभानसिंह भाटी, एडीएम सिलिंग श्री जब्बरसिंह, समाजसेवी महावीरसिंह सुकरलाई ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान स्काउट राज्य संगठन आयुक्त श्री बाबूसिंह राजपुरोहित, सीओ स्काउट पाली गोविंद मीणा, सहायक जिला कमिश्नर बसंत परिहार आदि भी उपस्थित रहे। रैली में सभी प्रान्तों के बच्चे अपने वहां की परंपरागत वेशभूषा धारण किये थे।

वहीं हाथों में राष्ट्रीयता और सद्भावना से ओतप्रोत नारों की तख्तियां थामे चल रहे थे। रैली बांगड़ स्कूल से शुरू होकर अहिंसा सर्कल, नवलखा रोड, गुलजार चौक, गोल निंबड़ा, सर्राफा बाजार, सोमनाथ मंदिर, सूरजपोल, अंबेडकर सर्कल, गांधी मूर्ति, शहीद स्मारक होते हुए मिल गेट बस स्टैंड पहुंची।

वहां से वाहनों में जंबूरी स्थल के लिए रवाना हुए। रैली का जगह-जगह पर विभिन्न संस्था-संगठनों ने स्वागत किया।

विभिन्न प्रांतों से आए 500 स्काउट गाइड के दल ने परंपरागत वेशभूषा में पाली शहर का भ्रमण किया।

निवाई के युवाओं ने केदारकन्ता चोटी पर तिरंगा फहराया

निवाई, (निसं)। निवाई शहर के एक पर्वतारोही ने उत्तराखण्ड में स्थित केदारकन्ता चोटी पर भारतीय तिरंगा फहराया है।

पर्वतारोही विजय कुमार बुवावत व उसके साथी रोहित तिवाडी ने माइनस 3 डिग्री के तापमान में पर्वत की चौटी पर तिरंगा लहराया है।

पर्वतारोही श्यामाप्रसाद मुखर्जी नगर निवाई निवासी विजय कुमार ने बताया कि केदारकन्ता चौटी पर सर्दियों में औसतन तापमान माइनस 3 डिग्री से माइनस 20 डिग्री तक रहता है।

केदारकन्ता चौटी की ऊंचाई माउन्ट एवरेस्ट की आधी है। ०

उत्तराखण्ड स्थित केदारकन्ता चौटी पर निवाई के पर्वतारोही।

रामकृष्ण परमहंस और उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी विवेकानंद के बीच बातचीत के अंदर छिपा है खुशहाल जिंदगी जीने का रहस्य

राम कृष्ण जी ने बतलाया कि वही इन्सान सार्थक जीवन जीते हैं, जो दूसरों के लिए जीते हैं। अगर धन-सम्पत्ती दूसरों की भलाई करने में मदद करे या उनके काम आए तो इसका कुछ मूल्य है, अन्यथा यह धन सिर्फ बुराई का एक ढेर और कूड़ा ही है और इससे जितना जल्दी छुटकारा मिल जाये उतना बेहतर है। एक समय में एक काम करो, और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमे डाल दो और बाकी सब कुछ भूल जाओ। यदि तुम ईश्वर की दी हुई शक्तियों का सदुपयोग नहीं करोगे तो वह अधिक नहीं देगा, इसलिए प्रयत्न आवश्यक है ईश-कृपा के योग्य बनाने के लिए भी पुरुषार्थ चाहिए. कर्म के लिए भक्ति का आधार होना आवश्यक है। एकमात्र ईश्वर ही विश्व का पथ प्रदर्शक और गुरु है। पानी और उसका बुलबुला एक ही चीज है उसी प्रकार जीवात्मा और परमात्मा एक ही चीज है, अंतर केवल यह है कि एक परीमीत है दूसरा अनंत है। एक परतंत्र है दूसरा स्वतंत्र है। जब हवा चलने लगे तो

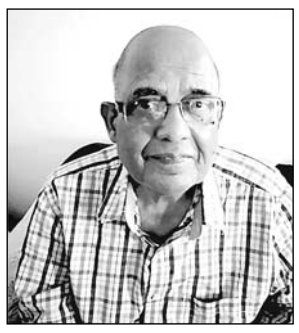

डॉ. जे. के. गर्ग

पंखा छोड़ देना चाहिए, पर जब ईश्वर की कृपा दृष्टि होने लगे तो प्रार्थना-तपस्या नहीं छोड़नी चाहिए।

रामकृष्ण परमहंस और स्वामीजी (गुरु और शिष्य) के बीच सवाल-जबावों में छिपा है खुशहाल जिन्दगी का राज

विवेकानन्द जी ने अपने गुरु से पूछा कि-'हमें जीवन की जटिलता में अपना उत्साह कैसे बनाये रखना चाहिए।'

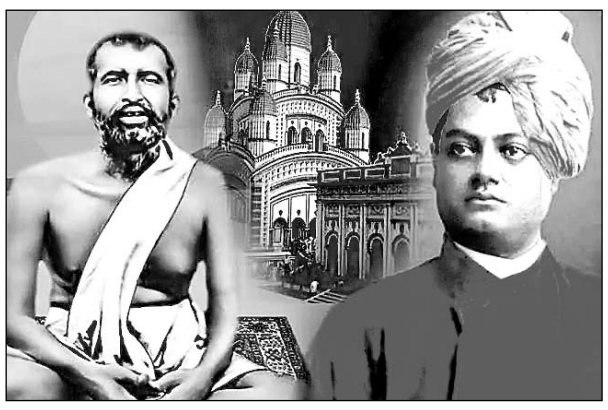

तब गुरु जी ने बताया कि-'इसका सबसे अच्छा उपाय है कि उसे याद करो जो तुमने पाया है, जो हासिल नहीं हो सका उसे नहीं। तुम्हें कहाँ पहुंचना है की बजाय, कि तुम कहाँ पहुँच गये हो।'

इन्होने दूसरा सवाल पूछा कि- 'कई बार मुझे लगता है कि- 'मैं बेकार में प्राथनाएं कर रहा हूँ, इसका कोई अर्थ नहीं है।'

परमहंस ने उत्तर दिया- 'शायद तुम डर गये हो, इससे बचो। जीवन कोई समस्या नहीं है, जिसे तुम्हें सुलझाना है। मुझे लगता है कि तुम यह जान जाओ कि जीना कैसे है, तो जीवन बेहद आश्चर्यजनक और सुंदर है।'

उन्होंने तीसरा सवाल किया कि- 'हमारे हमेशा दुखी रहने का कारण क्या है?'

रामक्रष्ण बोले- 'जीवन की जटिलता से परेशान होना लोगों की आदत बन गई है, यही प्रमुख वजह है कि लोग खुश नहीं रह पाते हैं।'

उन्होंने चौथा सवाल किया कि- 'अच्छे लोग हमेशा दु:ख क्यों पाते हैं?'

परमहंस बोले- 'जिसे तुम दु:ख कह रहे हो, दरअसल वह एक परीक्षा है। परीक्षा से प्राप्त अनुभव से उनका जीवन और बेहतर होता है, बेकार नहीं। रगड़े जाने पर ही हीरे में चमक आती है। आग में तपने के बाद ही सोना शुद्ध होता है।'

विवेकानन्द ने वापस सवाल किया- 'क्या इसका मतलब है दु:ख से प्राप्त अनुभव उपयोगी होता है?'

इसके जबाव में गुरुदेव बोले- 'बिल्कुल ठीक समझ रहे हो, अनुभव एक कठोर शिक्षक की तरह है। पहले वह परीक्षा लेता है और फिर सीख देता है।'

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 7 जनवरी, 2023

माघ मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, पुनर्वसु नक्षत्र रात्रि 3:08 तक, ऐन्द्रयन योग प्रात: 8:51 तक, बालव करण सांय 5:53 तक, चन्द्रमा रात्रि 8:24 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-मकर, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:39 से 9:57 तक, चर 12:33 से 1:51 तक, लाभ-अमृत 1:51 से 4:26 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:55

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कर्क
घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।